श्री वर्धमान
महावीर विधान

रचयिता
आचार्य वसुनन्दी मुनि

कृति : श्री वर्धमान महावीर विधान
मंगल आशीर्वाद : परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108
विद्यानन्द जी मुनिराज016-17)
कृतिकार : आचार्य वसुनन्दी मुनि
संपादन : मुनि शिवानंद
प्राप्ति स्थान :
- श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली, बोलखेड़ा (कामां) राजस्थान
- अ. क्षे. जय शांतिसागर निकेतन, मंडोला, गाजियाबाद (उ.प्र.)
- हिमांशु जैन मो. 09024182930

संस्करण : द्वितीय 1000 (सन् 2019)
प्रकाशक : निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समितिल्पना जैन धर्मपत्नी
श्री रजत जी जैन

✻ पुण्यार्जक ✻

श्रीमती नीनू जैन धर्मपत्नी श्री लोकेन्द्र जैन

(चन्द्रा सैनेट्री वाले) आर्य नगर, मुरार, ग्वालियर

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली
मो.: 9811374961, 9811363613
pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

श्री वर्धमान महावीर विधान

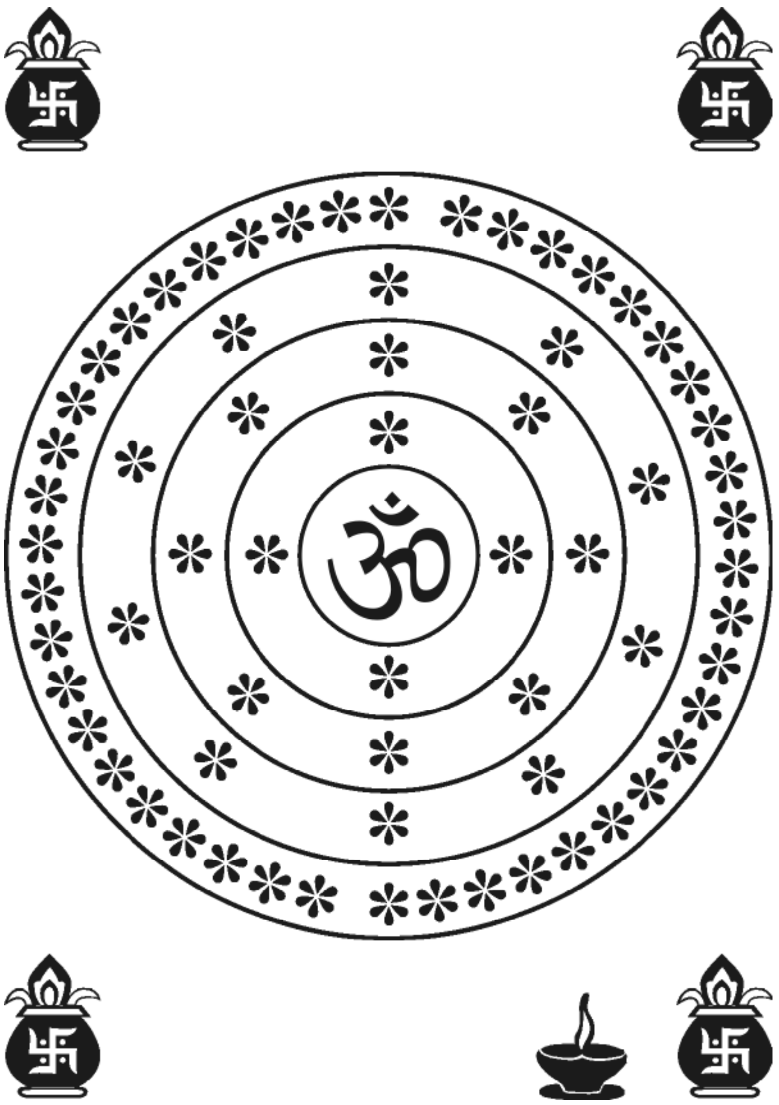

माण्डला

पुरोवाक्

श्रीलीलायतनं महीकुलगृहं कीर्तिप्रमोदास्पदं,
वाग्देवीरतिकेतनं जयरमाक्रीडानिधानं महत्।
स स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थप्रदं,
प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनांघ्रिद्वयं॥

जो मनुष्य प्रात:काल इच्छित पदार्थों को देने वाले एवं कल्पवृक्ष के पल्लव के समान कान्ति वाले जिनचरण कमल युगल का दर्शन करता है वह लक्ष्मी का क्रीड़ागृह, पृथ्वी का कुलभवन, कीर्ति का हर्षस्थान, सरस्वती का प्रीतिगृह, विजयलक्ष्मी का महान् क्रीड़ा निधान तथा समस्त महोत्सवों का अद्वितीय भवन होता है।

जिनभक्ति के स्वर जब आत्मा प्रदेशों में गुंजित होते हैं तो कर्म ऐसे पलायन कर जाते हैं जैसे गरुड़ ध्वनि को सुन सर्प। जिनभक्ति करने वाले भक्त पर कर्म भी अपना आतंक नहीं दिखाते। जिन भक्ति प्राणी का जननी की भाँति संरक्षण करती है। जैसे माँ शिशु की देह का पालन पोषण करती है उसी प्रकार जिनभक्ति जीव के आत्मगुणों का पोषण कर उसे सिद्धशिला पर चिरकालीन वास के योग्य बना देती है। माँ की अंक में बैठा बालक निश्चिंत होता है भय रहित निर्भय होता है, उसी प्रकार जिनेंद्र प्रभु का आश्रय लेने वाला जीव तीनों लोकों में निश्चिंत व निर्भय होता है।

"विचरे चाहे जहाँ कि जिनको, जगन्नाथ का एकाधार।
कौन माई का जाया रखता, उन्हें रोकने का अधिकार॥"

जिस प्रकार पूर्ण चंद्रमा समुद्र की उत्ताल लहरों का कारण है उसी प्रकार जिनेंद्र प्रभु के दर्शन भव्य के चित्त में आनंद वीचियों को उत्पन्न करने वाला है। जिनेंद्र भगवान् के दर्शन मात्र से समस्त अवगुण नष्ट हो जाते हैं, समृद्धि, सुख-शांति प्रसन्न हो उसकी ओर आकर्षित होती है, इच्छित समस्त पदार्थों की आपूर्ति होती है और तो क्या कर्मों के निविड बंध भी समूल नष्ट हो जाते हैं।

देव! त्वदीय चरणद्वयदर्शनेन,
कर्मक्षयो भवति बोधिसमाधिलब्धिम्।
निष्ठामियर्ति विलयं खलु पापमूलम्,
सर्वार्थसिद्धिविपुलं परतः सुखं च॥

हे देव! आपके चरण युगल के दर्शन से कर्मों का क्षय होता है। दर्शन करने वाला व्यक्ति बोधि तथा समाधि को, संसार की निकटता को, पाप के मूल कारण के विनाश को तथा परलोक में सर्वार्थसिद्धि के विपुल सुख को प्राप्त होता है।

प्रस्तुत कृति **"श्री वर्धमान महावीर विधान" परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज** द्वारा रचित भक्ति का सुंदरतम साधन है। बिना निमित्त के श्रावक निज धर्मध्यान बनाने में समर्थ नहीं है अत: करुणामय, भव्यों के शुभ चिंतक आचार्यों ने अनेक स्तुति, स्तोत्र, विधान प्रदान किए। उन्हीं सुरम्य भक्ति पाठों की परंपरा में **"श्री वर्धमान महावीर विधान"** भव्यों की विशुद्धि का हेतु है।

इस विधान के मुद्रण, पाण्डुलिपि संशोधन में जिन-जिन महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है उन्हें सदैव पूज्य गुरुवर श्री का मंगलमय शुभाशीष। गुरुवर श्री संयम पथ सदैव आलोकित रहे शताधिक वर्षों तक यह वसुधा गुरुवर श्री के तप, ज्ञान, साधना से सुरभित रहे। परमपूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, अक्षरशिल्पी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज के चरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु.......।

—मुनि शिवानंद

मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।1।।

श्री मन्नम्र-सुरा-सुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा-
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।2।।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्त-ममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति-श्री-नगराधिनाथ, जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।3।।

नाभेयादि जिनाधि-पास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु लाङ्गलधराः सप्तोत्तराविंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि-पुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।4।।

ये सर्वौषध-ऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग-महानिमित्त-कुशलाः येष्टौ विधाश्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।5।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृत्तिमही वीरस्य पावापुरे।
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेद-शैलेऽर्हताम्।

शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।6।।

ज्योतिर्व्यन्तर भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बू शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।7।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर-प्रवेश-महिमा सम्भावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।8।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि।।9।।

।। इति श्री मंगलाष्टकस्तोत्रम् ।।

विधान की प्रारम्भिक क्रियायें

अमृतस्नान मंत्र

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं स्रावय-स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(अंजुलि में जल लेकर शरीर पर छिड़कें।)

तिलक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/यजमानस्य सर्वांगशुद्धि-हेतवे नवतिलकं करोम्यहम्।

1. शिखा 2. मस्तक 3. ग्रीवा 4. हृदय 5. दोनों भुजाएँ 6. पीठ, 7. कान, 8. नाभि, 9. हाथ।

दिग्बन्धन मन्त्र

(सभी दिशाओं में बन्द मुट्ठी से पुष्पक्षेपण करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशातः समागत-विघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशातः समागत-विघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

(दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशातः समागत-विघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूँ फूट स्वाहा।

(पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशातः समागत-विघ्नान् निवारय निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

(उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशातः समागत-विघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

(सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें)

परिचारक मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा। (सात बार)

आत्म रक्षा मंत्र

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय-घातय परविघ्नान् स्फोटय-स्फोटय सहस्रखण्डान कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द-छिन्द परमन्त्रान् भिन्द-भिन्द वाः वाः क्षां क्षः हूं फट् स्वाहा।

(तीन बार अपने ऊपर पुष्पक्षेपण करें)

शान्ति मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्व पर-कृच्छ्रुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें)

भूमि शुद्धि मंत्र

ॐ शोधयामि भूभागं जिनधर्माभिरुत्सवे।
काल धौतोज्ज्वल स्थूलं कलशापूर्णवारिणी॥

ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु कुरु ह्रूं फट् स्वाहा।

पात्र शुद्धि मंत्र

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नाय, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि।

(पूजा के बर्तन, चटाई आदि पर जल सिंचन कर शुद्ध करें)

द्रव्य शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः असि आ उ सा समस्त तीर्थ पवित्र जलेन शुद्ध पात्र निक्षिप्त पूजा द्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा द्रव्य को मंत्रित जल से शुद्धि करें)

सकलीकरण

(अंगुलियों में पंच परमेष्ठी की स्थापना करना)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

(शिर झुकाते हुये दोनों अंगूठों से नमस्कार करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

(दोनों तर्जनी से नमस्कार करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः

(दोनों मध्यमा से नमस्कार करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

(दोनों अनामिका से नमस्कार करें)

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठकाभ्यां नमः।

(दोनों कनिष्ठा से नमस्कार करें)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः।

(दोनों कर तलों से नमस्कार करें)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

(दोनों कर पृष्ठों से नमस्कार करें)

अंग शुद्धि (दोनों हाथों से अंग स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(सिर का स्पर्श करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(मुख का स्पर्श करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(हृदय का स्पर्श करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(नाभि का स्पर्श करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

(पैरों का स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां माम् रक्ष रक्ष स्वाहा।

(शरीर पर पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(वस्त्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(पूजा साामग्री के पास पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम पूजास्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(पूजा स्थल पर पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः सर्वजगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

(चारों ओर पुष्प क्षेपण करें)

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वविघ्न निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

(सब ओर पुष्पक्षेपण करें)

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

(परिचारकों पर पुष्पक्षेपण करें)

यज्ञोपवीत धारण

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणाय अर्हं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

नियम

सप्त व्यसनों का त्याग, अष्ट मूलगुणों को धारण करना।

जल शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गंगा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरि-कान्ता सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता सुवर्णरूप्यकूला-रक्ता रक्तोदाः क्षीराम्भोनिधि-जलं-सुवर्णघट-प्रक्षिप्तं नवरत्नगन्धाक्षत-पुष्पार्चिता-मोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना।)

मंगल कलश के ऊपर श्रीफल रखने का मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पूंगादि फलादि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।
2. ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

मंगलकलश स्थापना

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्मणि वीर निर्माण सम्वत्सरे...मासानामुत्तमे मासे...मासे...पक्षे...शुभ तिथौ...वासरे प्रशस्त लग्ने...कार्यस्य निर्विघ्न समाप्त्यर्थंनवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादि शोभितं मंगल कलश स्थापनं करोम्यहम्। श्रीं झ्वीं क्ष्वीं हंसः स्वाहा।

(ईशान कोण में मंगलकलश स्थापित करें)

दीपक स्थापना

रुचिर-दीप्तिकरं शुभ-दीपकं, सकल-लोक-सुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिर-जालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

अभिषेक पाठ

श्रीमन्नतामर शिरस्तटरत्नदीप्ति, तोयावभासि चरणाम्बुज युग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत पद प्रदमाभिनम्य, त्वन्मूर्ति षूद्यदभिषेक-विधिं करिष्ये॥

अथ पौर्वाह्णिक/माध्याह्णिक/अपराह्निक देव वन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तव-समेतं श्रीपंचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(27 श्वासोच्छ्वास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र का स्मरण करें)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाजिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूत मुखादयस्ताः।
सद्भाव लब्धि समयादि निमित्त योगात्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥

(पुष्पक्षेपण करें)

श्री पीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघैः, श्री प्रस्तरे पूर्ण शशांककल्पे।
श्री वर्तके चन्द्र-मसीतिवार्तां, सत्यापयंती श्रियमालिखामि॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोम्यहम्।

(अभिषेक की पीठ या थाली में श्रीलेखन करें)

कनकादि-निभं कम्रं, पावन-पुण्य-कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं, जिनस्नपनायभक्तितः॥

ॐ ह्रीं पीठस्थापनं करोम्यहम्।

(सिंहासन स्थापित करें)

भृंगार-चामर-सुदर्पण-पीठ कुम्भ
तालध्वजातप-निवारक-भूषिताग्रे।
वर्धस्वनन्द जय पाठ पदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्तमहं श्रयामि॥

वृषभादि सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णु चर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय, भक्त्या पीठे महोत्सवम्।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह स्नपनपीठे सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ इति प्रतिमा स्थापनम्।

(प्रतिमा पाण्डुकशिला पर विराजमान करें)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्य-विधौ-सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि वारिभिरपूरय दुद्घ कुम्भान्।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम चन्दन भूषिताग्रान्।।
शातकुम्भीय कुम्भौघान्, क्षीराब्धेस्तोय पूरितान्।
स्थापयाामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुः कोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोम्यहम्।।

(चार कलश स्थापित करें)

आनन्द-निर्भर-सुर-प्रमदादि-गानै-
र्वादित्र-पूर-जय-शब्द-कलप्रशस्तैः।
उद्गीयमान जगतीपति-कीर्तिमेनाम्,
पीठस्थलीं वसु-विधार्चन-योल्लसामि।।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म-प्रबन्ध निगडैरपि हीनताप्तम्,
ज्ञात्वाऽपि भक्तिवशतः परमादि देवम्।
त्वां स्वीय-कल्मष-गणोन्मथनाय देव।
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थतत्वम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

तीर्थोत्तम भवै नीरैः क्षीरवारिधि रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्माप्तान्, जिनान् सर्वार्थ सिद्धिदान्।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा।

सकल भुवन नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषव विधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिष-वन वारां, बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विदधातुं भुक्ति सन्मुक्तिलक्ष्मीम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्री द्रीं हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं हः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमंत्रेणाभिषेकं करोमि।

दूरावनम्र-सुरनाथ-किरीट-कोटि,
संलग्न-रत्न-किरणच्छविधूसरांघ्रिम्।
प्रस्वेद-ताप-मल-मुक्तमपि प्रकृष्टै,-
र्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाऽभिषिञ्चे।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतु-र्विंशति तीर्थंकर परमदेवं मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे...प्रदेशे....जिलान्तर्गते....नाम्निनगरे...चैत्यालये (मन्दिरे) मण्डपे वीर निर्वाण संवत्सरे...मासानामुत्तमे मासे...मासे....पक्षे.... शुभ तिथौ...वासरे शुभघटी लग्ने शुभ...मुहूर्ते मुन्यार्यिकाश्रावक श्राविकाणां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे

यन्त्राभिषेक

अर्हं मंत्रं नमस्कृत्य, रत्नत्रय तपोनिधिम्।
सिद्धयंत्रं स्नपयामि, सर्वोपद्रव शान्तये।।

ॐ ह्रीं श्रीविनायक-सिद्ध-यंत्रं च जलेन स्नपयामः।

स्नात्वा शुभांवर धराः कृत यत्न योगात्।
यंत्रं निवेश्य शुचि पीठ वरेऽभिषिञ्चेत्॥
ॐ भूर्भुवः स्वरिह मंगल यंत्रमेतत्।
विघ्नौघवारकमहं परिषेचयामि॥

ॐ ह्रीं भूर्भुवः स्वरिह विघ्नौघ वारकं यत्रं वयं परिषेचयामः।

(उपर्युक्त मंत्र पढ़कर यंत्र का अभिषेक करें।)

पानीय-चन्दन-सदक्षत-पुष्प-पुञ्ज,
नैवेद्य-दीपक-सुधूप-फलव्रजेन।
कर्माष्टक क्रथन वीर-मनन्त-शक्तिं,
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे तीर्थपा! निज यशोधवली कृताशाः,
सिद्धौषधाश्च भव-दुःख-महागदानाम्।
सद्भव्य हृज्जनित पंक-कबंध-कल्पाः,
यूयं जिनाः सतत शान्ति-करा-भवन्तुः॥

इत्युक्त्वा शान्त्यर्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(शान्तिधारा करें पश्चात् प्रक्षालन विधि करें)

नत्वामुहुर्निज-करैरमृतोपमेयैः,
स्वच्छै-र्जिनेन्द्रतव-चन्द्र-करावदातैः
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त रम्ये,
देहेस्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोम्यहम्।

स्नानं विधायभवतोऽष्ट सहस्र नाम्ना-
मुच्चारणेन मनसोवचसो विशुद्धिम्।

जिघृक्षुरिष्टमिन तेऽष्ट मयीं विधातुं
सिंहासने विधि-वदत्र निवेशयामि॥

ॐ ह्रीं श्रीजिन बिम्ब सिंहासने स्थापितं करोम्यहम्।

जलगंधाक्षतैः पुष्पैः, चरु-दीप-सुधूपकैः।
फलै-रर्घैर्जिनमर्चे, जन्मदुःखाप-हानये॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठ स्थितजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा परीत्य निज नेत्र ललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघ-सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पाद-योगाद्,
भूयाद् भवातप-हरं धृतमादरेण॥
मुक्ति श्री वनिताकरोदकमिदं, पुण्यांकुरोत्पादकं,
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्र चक्र पदवी राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता, संवृद्धि संपादकं,
कीर्ति श्री जयसाधकं तव जिन-स्नानस्यगन्धोदकम्।

ॐ ह्रीं श्रीजिनगन्धोदकं स्वललाटे धारयामि।

(गंधोदक को मस्तक पर लगावे)

इमे नेत्रे जाते सुकृत जल-सिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं कृतिजन गणादे-यमभवत्।
मदीयाद् भल्लाटादशुभतर कर्माटनमभूत्॥
सदेदृक्पुण्यौघौ मम भवतु ते पूजनविधौ॥

इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं क्षिपाम्यहम्

(पुष्पक्षेपण करें)

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः।
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोएसव्वसाहूणं॥

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धामंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवली पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मन्त्रेभ्यो नमः सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणा-शेष दोष-कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगाप-मृत्यु-विनाशनाय, सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूँ क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूँ फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वविघ्नशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद् विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोक तरु सत्प्रातिहार्य-शोभन-पद-प्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्व सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय-भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय-दिव्य ध्वनि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय-म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय-र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय-घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय भामण्डल सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय-झ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य-शोभन-पद प्रदाय-स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय-छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य-शोभन-पद-प्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्ट-सहिताय बीजाष्टमण्डनमण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्त-कुसलाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अघोरगुण बंभयारीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोए सव्वसिद्धाय-दणाणंसर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवदो महदिमहावीर वड्ढमाण-बुद्धिरिसीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

जस्संतियं धम्मपहं णियंच्छे, तस्संतियं वेणइयं पउं जे।
कायेण वाचा मणसा विणिच्चं, सक्कार एतं सिर-पंचमेण।।

तव भक्ति प्रसादाल्लक्ष्मी-पुर-राज्य-गेह-पद-भ्रष्टोपद्रव-

दारिद्रोद्-भवोपद्रव-शाकिनी-डाकिनी-भूतपिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्ष-व्यापारवृद्धि-रहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्रीशान्तिरस्तु! शिवमस्तु! जयोऽस्तु! नित्यमारोग्यमस्तु! अस्माकं (शान्तिधाराकर्ता का नाम) तुष्टिरस्तु! पुष्टिरस्तु! समृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु सुखमस्तु! अभिवृद्धिरस्तु! दीर्घायुरस्तु! कुलगोत्र धनानि सदा सन्तु! सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु!

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्णकल्याणमङ्गलरूपमोक्षपुरुषार्थश्च भवतु।

श्री पद्मप्रभ-चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लिवर्धमान-पुष्पदन्त-शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येतेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं त्रिभुवनपतेः शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

इत्यनेन मन्त्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गन्धोदक-धारा-वर्षणम्

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्तिं भगवान् जिनेंद्रः॥

विनयपाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥

अनंत चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥

तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥

हरता अघ अंधियार के, करता धर्मप्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥

धर्मामृत उर जलधि सों ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिंहु जग भूप॥5॥

मैं बंदौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म बंध के छेदने, और न कछू उपाव॥6॥

भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥7॥

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजनको शिवगैल॥8॥

तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निर्विषता थाय॥9॥

चक्री खगधर इंद्रपद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रमकर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥10॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुदी, जय जय जय जिनदेव॥12॥

थकी नाव भवदधि विषै, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥

रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥

तुमको पूजैं, सुरपती, अहिपति, नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिंधु में, खेओ लगाओ पार॥17॥

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजै आप समान॥18॥

तुमरी नेक सुदृष्टितें, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार॥119॥

जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥20॥

बंदौं पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥

चौबीसों जिनपद नमौं नमौं शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥22॥

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरौं नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥23॥

मंगल जिनवर पदनमों, मंगल अर्हन्त देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव॥24॥

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन-वच-काय॥25॥

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥26॥

या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल नाथूराम यह, भव सागर दृढ़ पोत॥27॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोस्तु! नमोस्तु!! नमोस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥1॥

ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मंत्रेभ्यो नमः।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा।
साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो॥
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पांजलिं क्षिपामि।

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते॥1॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥2॥
अपराजित मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥3॥
एसो पंच-णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं॥4॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं॥5॥

कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम्॥6॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥7॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण-पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथ महं यजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(यदि अवकाश हो तो यहाँ पर सहस्रनाम पढ़कर दस अर्घ्य देना चाहिए। नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ्य चढ़ाना चाहिए।)

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाम महं यजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुलपुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनाष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुलपुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिनसूत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्री मज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशम्,
स्याद्वाद - नायक - मनंत - चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ-सुदृशां-सुकृतैकहेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥1॥

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुतवैभवाय॥2॥

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति-स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥3॥

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपम्,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः,
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ यज्ञ पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥4॥

अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति मंगलपाठ

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ

(प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें)

नित्याप्रकंपाद्भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।1।।

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।3।।

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।4।।

जंघावलि-श्रेणि-फलांबु-तंतु, प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण स्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

सकामरूपित्व वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।7।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।8।।

आमर्ष सर्वौषधयस्तथाशीर्विषंविषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।9।।

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतः, मधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।10।।

(इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

नवदेवता पूजन

स्थापना

त्रैलोक्य में तिहुँ काल में, नवदेवता जग वंदिता।
अरिहंत सिद्धा सूरि पाठक, साधु मुनिवर नंदिता॥
जिन चैत्य अरु जिन सदन श्रुत, जिन धर्म कल्याणक महा।
आश्रित रहे जो भव्य इनके, मोक्ष उनने ही लहा॥

दोहा- नवदेवों को भक्ति वश, आह्वानन कर आज।
योगत्रय से पूजकर लहूँ, उभय साम्राज॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक (छंद-हरिगीतिका)

पूर्णेन्दु निर्मल ज्योत्सना सम, धवल शीतल नीर ले,
जन्मादि रोगत्रय विनाशूँ, देव पद त्रयधार दे।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनआगम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

शीतल सुगंधित मलयगिरि तन-ताप हारक चंदनं,
नव देवता के चरण आगे, भक्ति पूजा वंदनं।

संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनआगम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।

मुक्तासमा अति धवल द्युतिमय, चारु तंदुल लाय के,
शाश्वत विमल शिवसौख्य पाने, देव चरण चढ़ाय के।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनआगम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।

वातावरण कर दे सुगंधित, पुष्प मनहर लाए हैं,
निष्काम जिन को कर समर्पित, काम नशने आये हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनआगम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

व्यंजन अनूपम सरस रुचिकर, देह की क्षुधा नाशती,
आराध्य की पूजा करें तो, चेतना निधि भासती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म जिनआगम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुभ गगन आँगन में चमकते ज्योति ग्रह सम दीप हैं,
विधि मोहनी के नाश हेतु, आये आप समीप हैं।

संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनआगम-जिनचैत्य-
चैत्यालयेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

दश गंध युत ये धूप मनहर, वर्गणा दुःख नाशती,
जिन चरण आगे धूप खेऊँ, आत्मनिधि परकाशती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनआगम-जिनचैत्य-
चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुभ मोक्ष फल को प्राप्त करने, भक्तिवश अर्पण किये,
मम अक्ष रुचिकर सरस मनहर, फल सभी ऋतु के लिये।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनआगम-जिनचैत्य-
चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

संसार की बहुमूल्य मंगल, अर्घ द्रव्यों का बना,
बहुमूल्य शिवपद पाने हेतु, भक्तिरस में मैं सना।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनआगम जिनचैत्य-
चैत्यालयेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

छंद-लक्ष्मीधरा

देव सर्वज्ञप्राणी सदा मंगलं, नंत ज्ञानं सुखं दर्श नंतं बलं।
प्रतिहार्यं युतं वीतरागं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥1॥
सिद्ध शुद्धं शिवं निर्विकारं तथा, अव्ययं अक्षयं आत्मलीनं सदा।
विश्वनाथं प्रभो मुक्तिवामा वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥2॥
दर्श और ज्ञान चारित्र संपोषकं संघ संचालकं सूरि आराधकं।
पंच आचार पाले जिनं नंदनं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥3॥
हे उपाध्याय सुज्ञान दातार हो, भव्य के वासते सम्यकाधार हो।
साधकं द्वादशांगं सुपाठी वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥4॥
राग द्वेषादि को साधु संहारते, देव निर्ग्रंथ जो आत्म सम्हारते।
पालते हैं गुणं साधु मूलोत्तरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥5॥
भेद दो श्रावका और साधू कहा, तारता धर्म संसार से है अहा।
चिह्न स्याद्वाद से युक्त धर्मं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥6॥
देव सर्वज्ञ द्वारा गयी है कही, गूंथते हैं गणेशा मुनी ने गही।
शारदा माँ सदा चित्त में ही धरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥7॥
सौख्य है निर्विकारी तथा शांत है, पूजते जो भवी होय मुक्ति कांत हैं।
कृत्रिमाकृत्रिमं चैत्य सिद्धीवरं, पूजता भक्ति से देव सौख्य करं॥8॥
तोरणा-द्वार घंटा ध्वजा सज्जिता, देव प्रक्षाल पूजा सदा अर्चिता।
शुभ्र चैत्यालयं पाप संहारकं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥9॥

घत्ता- अरिहंत जिनेशा, सिद्ध महेशा, सूरी पाठक दिग्वासी।
श्री चैत्य जिनालय, श्रुत ज्ञानालय, धर्म पूजता अविनाशी॥
वसु कर्म नशाए, वसुगुण पाए, वसु वसुधा को नित्य लहे।
वसुभूमि सभा की, सिद्ध रमा की, वसुनन्दी भी शीघ्र गहे॥
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्म-जिनागम-
जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वर्धमान महावीर विधान

(स्थापना)

(छंद-ज्ञानोदय)

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, वर्धमान जिनदेव नमूँ।
भव सागर के शोषक पोषक, मोक्षपंथ जिनराज नमूँ॥
भवजल पतित भव्य उद्धारक, तीर्थंकर शिवराज नमूँ।
सन्मति वीर रु वर्धमान जिन, महावीर अतिवीर नमूँ॥

दोहा

आह्वानन करता प्रभु, भाव भगति उर लाय।
जिनके सुमिरन मात्र से, हृदय कमल खिल जाय॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्र! अत्र मम-सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अथ अष्टक)

तर्ज- श्रीवीर महा अतिवीर सन्मति नायक......)

क्षीरोदधि निर्मल वारि, कंचन कलश भरूँ।
दे वर्धमान पद धार, रुज तिय नाश करूँ॥
श्री वर्धमान जिन वीर, भवदधि तारक हो।
भव वारिधि के तुम तीर, सब दुःख हारक हो॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेव-तीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्राय नमः जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बावन चंदन शुभ लाय, जिन पग अर्चित हो।
केसर करपूर मिलाय, नित नित चर्चित हो॥
आतप भव नाशन आज, शरण चरण आया।
शाश्वत शीतल शिव छाँव, पाने अकुलाया॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेव-तीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्राय नमः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधि वर्ण समान, अक्षत मन हारी।
जिन चरणन भेंट चढ़ाये, भासत सुखकारी॥
अक्षत सम निष्ठा ठान, अक्षय पद पाऊँ।
श्री वर्धमान शुभ नाम, निशदिन मैं ध्याऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेव-तीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विधि सुमन मँगाये, सुन्दर सुमन चुनू।
अलि गुँजित पुष्प चढ़ाये, निज गुण नित्य गुणू॥
हे काम विनाशक देव, सन्मति दायक हो।
तुम पूजन की हम टेव, त्रिभुवन नायक हो॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्राय नमः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस शुभ व्यञ्जन लाये, कंचन थाल भरूँ।
जिन पद शुभ अग्र चढ़ाये, भूख अनादि हरूँ॥
हे वर्धमान जिन देव, शाश्वत सुख दाता।
तव पद की शाश्वत सेव, निश्चित भवि त्राता॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्राय नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भानि सम दीप जलाये, तव पद अग्र धरूँ।
मम मोह तिमिर नशि जाये, आरती नित्य करूँ॥

अन्तर तम नाशक देव, जिन शासन नायक।
मम तिमिर हरो स्वयमेव, तुम हो गुण दायक।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्राय नमः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले धूप दशांगी आज, जिन पद मैं आया।
हर्षित है साधु समाज, मन्दिर महकाया।।
वसु कर्म मेटने आज, अग्नि में खेऊँ।
मिलता मुक्ति साम्राज्य, धोक चरण देऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल ऐला बादाम, पुंगी नारंगी।
काजू पिस्ता शुभ आम, दाडिम बहुरंगी।।
श्री वर्धमान जिननाथ, तुम पद मैं राखूँ।
पा भव भव तेरा साथ, आतम रस चाखूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्राय नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत वीर, सुमन मनोज्ञ धरूँ।
चरु दीप धूप सुख सीर, फल ले अर्घ्य करूँ।।
हे वर्धमान जिननाथ, आठों कर्म हरूँ।
नर भव हो सफल सनाथ, भवदधि शीघ्र तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

सन्मति वीर जिनेश को, नमन करूँ शतबार।
जयमाला गुण निधि कहूँ, पाने मुक्ति द्वार।।

चौपाई

जय श्री वर्धमान जिनदेवा, सुरनर असुर करें तुम सेवा।
तुम हो बालयति शिव नायक, भुक्ति मुक्ति पद के हो दायक।।
सिद्धारथ नृप पिता तुम्हारे, त्रिशला माँ के राज दुलारे।
तव पितुमह सर्वार्थ कहाये, श्रीमति पितुमही नाम बताये।।
कुण्ड ग्राम वैशाली माँही, ता सम कोऊ नगरी नाहिं।
नन्द्यावर्त शुभ महल बताया, जन्म प्रभु ने वहीं पे पाया।।
धनद इन्द्र शुभ आज्ञा पाकर, पन्द्रह मास रतन बरसाकर।
मन में अति आनन्द मनाया, निश्चित अतिशय पुण्य कमाया।।
श्री कीर्ति धृति ह्री की वृद्धि, जनता ने पायी समृद्धि।
सुख शान्ति जयगान किया था, ‘वर्धमान’ शुभ नाम दिया था।।
युगल मुनि तव दर्शन पाकर, ‘सन्मति’ नाम दिया हर्षाकर।
शंका अरु संदेह भगा था, चित में तब सद्ज्ञान जगा था।।
तरु लिपटे विषधर को वशकर, देव सखा भी भागे डरकर।
लेय परीक्षा माया छोड़ी, असुर नाम ‘महावीर’ से जोड़ी।।
संगम ने उपसर्ग किया था, समता से तब सहन किया था।
महावीर की समता लखकर, ‘वीर’ नाम तब दिया परखकर।।
घाति अघाति करम नशाये, तब ‘अतिवीर’ सुनाम धराये।
देवों ने शुभ पूजा कीनी, शुभ अनुभूति पाये नवीनी।।
भव सुख भोग विलास न भाये, बालयति जग में कहलाये।
तीस वर्ष में दीक्षा धारी, आतम रस के बने पुजारी।।
कूल गृह आहार लिया था, चन्दन ने भी आहार दिया था।
पक्ष मास उपवास धरे थे, घाति कर्म सब क्षीण करे थे।।
द्वादश वर्ष घोर तप कीना, पाया केवलज्ञान प्रवीना।
वर्ष तीस तक रहे केवली, हुये सिद्ध सब कर्म दे बली।।
पावापुर में पद्म सरोवर, मुक्ति पायी महा मनोहर।
मैं भी मुक्ति का अभिलाषी, कब होऊँ सिद्धालय वासी।।

जो भवि जन तव पूजन करते, अचिर काल में सब अघ हरते।
भक्ति भाव से तुमको ध्यावें, मनुज देव सुर सम्पति पावें।।
मन वच काय करें जे पूजा, ता सम पुण्य नहीं कोई दूजा।
वीर रूप जो हृदय चितारे, निश्चित मुक्ति वदन निहारे।।
वीर नाम शिव सुख का प्याला, मोह कर्म की नाशे हाला।
भक्ती वश तव पूज रचायी, मानो निज निधि मैंने पायी।।

(दोहा)

भूल चूक सब माफ हो, मैं हूँ निपट अजान।
नेत्र हीन भी जीव को, ज्योति देता भान।।
तव जयमाला भक्ति से, मन में निपजा मोद।
शब्द ज्ञान थोथा रहा, मिला तत्त्व निज बोध।।

(घत्ता)

हे वीर जिनेशा, जिन तीर्थेशा, मंगलकारी पाप हरं।
मैं नमूँ हमेशा, नमित सुरेशा, सब जीवों को सौख्यकरम्।।
जे भवि आराधक, निजमन साधक, संयम धारक सुखकारी।
ते पाये समाधि, रहित उपाधि, व्याधि हरे जो दुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

नीरादिक शुभ द्रव्य, तव पद में अर्पण करूँ।
सिद्ध बनूँ मैं नव्य, "वसु" विधि कर्म नशाय के।।

(शान्तये शान्तिधारा)

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रथम कोट

(अनन्त चतुष्टय)

तर्ज-गंगा नदी का नीर निर्मल.....(नवदेवता पूजन)

ज्ञानावरण की पाँच प्रकृति, ज्ञान गुण को ढाँकती।
ज्ञानावरण मति श्रुत अवधि अरु, मनः केवल भासती।।
सम्पूर्ण ज्ञानावरण तुमने, योग बल से क्षय किये।
सद्ज्ञान की सम्प्राप्ति हेतु, तव चरण आश्रय लिये।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तज्ञानगुणसहिताय श्रीदेवाधिदेव-तीर्थंकरवर्धमान-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवरण दृग का प्रभु ने, नव विधि से है कहा।
वह पंच निद्रा चतु अदर्शन, है विधि दुष्कृत महा।।
सम्पूर्ण दर्शनआवरण को, क्षय किया क्षण मात्र में।
सम्पूर्ण लोकालोक को, अब मैं निहारूँ गात्र में।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तदर्शनगुणसहिताय श्रीदेवाधिदेव-तीर्थंकरवर्धमान-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु बीस प्रकृति मोह की, जग में सदा विख्यात हैं।
जिसने किया सम्पूर्ण क्षय, वो ही हमारे आप्त हैं।।
दृग मोह अरु चारित्र से, दो भेद थे जिन ने कहे।
सम्पूर्ण सुख की प्राप्ति हेतु, जिन चरण हमने गहे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तसुखगुणसहिताय श्रीदेवाधिदेव-तीर्थंकरवर्धमान-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये विघ्न कारक अन्तराय, दुष्करम जिन ने कहा।
ये दान लाभ रु भोग उप भी, वीर्य गुण चेतन महा।।
तुम नाश करके कर्म सब ये, नन्त बल को पा लिया।
अब छोड़ करके शरण सारी, तब चरण आश्रय लिया।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तबलगुणसहिताय श्रीदेवाधिदेव-तीर्थंकरवर्धमान-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(घत्ता)

चौ घाति निवारक, हे गुण धारक, कर्म विदारक, सुखकारी।
हे संयम साधक, भव दुख बाधक, गुण आराधक, दुखहारी॥
शुभ नंत चतुष्टय, चेतन पुष्य, गुण संतुष्य, विघ्नहरण।
मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ, मंगल गाऊँ, ध्यान लगाऊँ, सौख्य करण॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तचतुष्टयगुणासहिताय श्रीदेवाधिदेव-तीर्थंकरवर्धमान-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। *(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

द्वितीय कोट

पंचकल्याणक के अर्घ्य

गर्भ कल्याणक

(दोहा)

श्वेत पक्ष आषाढ़ का, माँ त्रिशला उर आय।
षष्टी तिथि वैशालि में, सिद्धारथ सुख पाय॥
गर्भ कल्याणक पूजते, जे सुर नर अहमिन्द्र।
पूजा भक्ति से बने, श्रेष्ठ मनुज वा इन्द्र॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़-शुक्ला-षष्टम्यां गर्भकल्याणक-प्राप्तये श्रीवर्धमान-महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म कल्याणक

श्वेत पक्ष तिथि तीन दस, चैत मास सुखकार।
उत्तर फाल्गुन भानि में, हुआ वीर अवतार॥
मेरु सुदर्शन पाण्डुशिल, किया शक्र अभिषेक।
जो भवि प्रत्यक्ष देखते, पाते परम विवेक॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्ला-त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक-प्राप्तये श्रीवर्धमान-महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा कल्याणक

दशमी मंगसिर श्याम की, भवि जीवन सुखकार।
यथाजात निर्ग्रन्थ हो, परिग्रह पोट उतार॥

साक्षी सिद्धों की गही, लिया भेष निर्ग्रंथ।
मुक्ति रमा के वरण को, चले वीर शिव पंथ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंगसिरकृष्णादशम्यां तपकल्याणक-प्राप्तये श्रीवर्धमान-महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान कल्याणक

शुक्ल पक्ष बैशाख का, दशमी दिन अवसान।
वर्धमान मुनिराज ने, पाया केवलज्ञान॥
बे दस कोटे युक्त है, भू अष्टम सुखकार।
समवशरण वृष की सभा, निश्चित शिव आधार॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्ला-दशम्यां केवलज्ञानकल्याणक-प्राप्तये श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष कल्याणक

कार्तिक श्याम चतुरदशी, निश का अन्तिम योग।
नाश अघाति कर्म सब, हुये सिद्ध अनुयोग॥
कर्म बाण को काटने, पूजूँ पद निर्वाण।
मोदक लेकर युगल कर, जोडू पाने त्राण॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिककृष्णा-चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक-प्राप्तये श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के अर्घ्य

(सम्यग्दर्शन)

मिथ्या दर्शन रहित जिन, सम्यग्दर्शन मूल।
भव्य जनों को आप ही, भवसागर के कूल॥
अष्ट अंग जुत दोष तुम, रहित बीस अरु पाँच।
जो जन गुण पूजन करें, लहे आत्म पद साँच॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनगुण-संयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सम्यग्ज्ञान)

संशय आदि दोष से, रहित ज्ञान सम्पूर्ण।
उभय ज्ञान से सहित हो, करें कर्म को चूर्ण॥
स्वपर प्रकाशक ज्ञान है, दृग व्रत का आधार।
अंत रहित निज सिद्ध ये, करे जगत् उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्ज्ञानगुण-संयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सम्यग्चारित्र)

अशुभ योग से रहित जो, शुभ में सदा प्रवृत्त।
बे विद संयम नित करें, भवकानन निवृत्त॥
संयम गुण है चित्त का, शुद्ध भाव आधार।
मैं भी संयम धारकर, लहूँ मुक्ति का द्वार॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्चारित्रगुण-संयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता-रत्नत्रय धारक, कर्म विदारक, धर्म प्रचारक गुणवंता।
भव-भव दुख हारक, शिव सुख कारक, मोह सुमारक भगवंता॥
हम शरणा आये, दर्शन पाये, पूज रचाये गुण पाने।
मन मोद मनाये, आनन्द छाये, सब हर्षाये अघ हाने॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणकविभूति-रत्नत्रायगुण-संयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

तृतीय कोट

जन्म के 10 अतिशय

(तर्ज- भक्त अमर नत मुकुट.....)

काम देव सम सुन्दर तन है, राग भाव का है नाशक।
भव्य जीव तव तन को लखकर, बने स्वयं के अवभासक॥
तीन लोक में तुम सम जिनवर, अन्य न कोई हो सकता।
अतिशय रूप तुम्हारा अतिशय, जो पूजे दुख खो सकता॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशयसुन्दररूपजन्मातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमान-महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध और दुर्गन्ध जगत् में, सब दुख की कारण होती।
हे जिनवर शुभ रूप तुम्हारा, दिखे सीप में जो मोती॥
शुभ्र सुगन्धित अतिशय भगवन् मन संताप मिटाता है।
भव जन निरख-निरख कर तुमको, गुण तन्मय हो जाता है॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगन्धिततनजन्मातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसारी जीवों के तन से, नित्य पसीना बहता है।
किन्तु वीर तव देह जन्म से, सहज ही निर्मल रहता है।
आप पसेव रहित अतिशय के, धारक चिद् गुण भण्डारी।
निर्मल रूप निहारे तेरा, बने रसिक अरु अविकारी॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं पसेवरहिततनजन्मातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी मनुज तिर्यंच करम भू, नित्याहार निहार करें।
हे तीर्थंकर महापुरुष तुम, देह अनूपम आप धरें॥
हों आहार सहित निहार बिन, कैसी ये अद्भुत माया।
ऐसा अतिशय पाने को प्रभु, मेरा मन भी ललचाया॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं निहाररहिततनजन्मातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ट कटुक अरु करकस वाणी, जीव जगत् के नित बोलें।
हित मित प्रिय वचन उच्चारक, हम भी कब ऐसे होलें॥
लोकप्रिय तव वाणी जिनवर, सबका चित्त लुभाती है।
रह रह करके याद मुझे भी, तव वाणी की आती है॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं हित-मित-प्रियवचनजन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय का भाव क्षयोपशम, भिन्न भिन्न जग ने देखा।
हीनादिक बल युक्त जीव में, न कोई अचरज लेखा।।
हे जिनवर तव देह जन्म से, अतुल शक्ति की धारक है।
ऐसा अतिशय पाने को प्रभु, मम मति तव आराधक है।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतुलबलजन्मातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसारी नर तिर्यंचों का, रुधिर रक्त देखा जाता।
अतिशय वत्सल भाव युक्त तुम, श्वेत रुधिर लेखा जाता।।
ऐसा अतिशय तव शरीर का, भव्यों को अघहारक है।
जो तव अतिशय ध्यान करे नित, उसको यह भव तारक है।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्वेतरुधिरजन्मातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् विधि से संस्थान जीव में, भिन्न भिन्न पाये जाते।
उत्तम मध्यम और अधम भी, विधि वश अपनाये जाते।।
समचतुस्र संस्थान आपका, भवि जन को सुख कारक है।
पुण्य प्रकाशक पाप विनाशक, भव दुख का परिहारक है।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं समचतुरस्रसंस्थानजन्मातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य योग से श्रेष्ठ मनुज ही, वज्र वृषभ संहनन पाता।
पापी पर संतापित करके, संहनन अधम है पाता।।
हे जिनवर अतिशय तव तन का, उत्तम संहनन भी माना।
इस बिन मोक्ष न पाता कोई, अतः बना मैं दीवाना।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रवृषभनाराचसंहननजन्मातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्यवान पुरुषों के तन में, लक्षण शुभ पाये जाते।
किन्तु कुलक्षण पापी तन में, सर्व जगत में दिख जाते।।

लक्षण सहसरु आठ श्रेष्ठ हैं, जो तव तन में ही होते।
जो तव तन का ध्यान करें वे, पाप करम अपने धोते।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रअष्टोत्तरशुभलक्षणजन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(घत्ता)

अतिशय सुखकारी, भव दुख हारी, मंगलकारी पुण्य निधि।
भव भव भयहारी, हे त्रिपुरारी, कर्म प्रजारी मोक्ष विधि।।
अतिशय दस पूजों, तुम सम हूजो, शिव सम दूजो ना कोई।
ले पूज रचावें, मंगल गावें, कर्म नशावें शिव सोई।।

ॐ ह्रीं अर्हं जन्मातिशयसंयुक्ताय देवाधिदेव-तीर्थंकर श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चतुर्थ कोट

(बारह भावना)

(तर्ज-1. उमरिया रह गई थोड़ी.....) (2. ऐ मेरे वतन के लोगों......)

जग के ये वैभव सारे, भोगी तिन नित्य संवारे।
ये हैं अनित्य दुख दाई, बारह भावन सुख दाई।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनित्यानुप्रेक्षाफलसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशरण है जीव जगत् के, नहीं साथी बुरे बखत के।
जिन श्रुत मुनि आतम शरणा, चिन्तन से भवदधि तरणा।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशरणानुप्रेक्षाफलसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँ गति में जीव भरे हैं, परिवर्तन नंत करे हैं।
संसार सदा दुखदाई, तज मुक्ति रमा परणाई।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं संसारानुप्रेक्षाफलसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पुण्य पाप को करता, सुख दुख को वो ही भरता।
एकत्व भाव सुखदाई, निज ध्याओ बन जिन राई।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकत्वानुप्रेक्षाफलसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवादि परिग्रह सारे, तू क्यों न अन्य विचारे।
है ममत्व भाव दुखदाई, तज होले तू शिव राई।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं अन्यत्वानुप्रेक्षाफलसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गन्ध अशुचि मय देहा, तू क्यों ना बने विदेहा।
अरु बन जा तू गुण राई, तज राग सदा दुखदाई।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशुचित्वानुप्रेक्षाफलसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादिक आस्रव कारण, करले तू शीघ्र निवारण।
आस्रव दुखकार घनेरे, योगी तिनको निरवेरे।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं आस्रवानुप्रेक्षाफलसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय धारक जोगी, संवर लह आतम भोगी।
संवर मुक्ति का पंथा, तज संग होय निर्ग्रन्था।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं संवरानुप्रेक्षाफलसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप निश्चित कर्म जलावे, अरु बहु विधि कर्म खपावे।
निर्जर मुक्ति की दासी, गह हो जा मुक्ति वासी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्जरानुप्रेक्षाफलसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य जगत् विख्याता, विधि सहित जीव दुख पाता।
रत्नत्रय निधि अपनाकर, शिव बन जा श्री परिणाकर।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकानुप्रेक्षाफलसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्लभ है वर नर काया, अरु रत्नत्रय की छाया।
केवल बोधी तू पाले, मुक्ति को गले लगा ले।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं बोधिदुर्लभानुप्रेक्षाफल-संयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है धर्म सदा सुखकारी, निश्चय व्यवहार उचारी।
है धर्म मुक्ति का पंथा, धर बन जा तू शिव कंता।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मानुप्रेक्षा-फल-संयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

अष्टप्रातिहार्य

तीन छत्र तुम सिर पर सोहे, भविजन के नित मन को मोहे।
त्रय आताप हरे जनजन के, होय मनोरथ पूरण मन के।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रयप्रातिहार्यमंडिताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन छविदार सुहाना, पूजे जो पावे सुख नाना।
बनता निज सत्ता का धारी, अचल काल में हो अविकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासनप्रातिहार्यमंडिताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव भामण्डल की शुभ कान्ति, भव्य जनों को देती शान्ति।
अगले पिछले भव दिख जावें, देह कान्ति जिनवर की गावें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डलप्रातिहार्यमंडिताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चंवर ढुरे नित तन पे, राग द्वेष ना व्यापे मन में।
जिनवर का वैभव ये माना, चेतन निज का अतुल खजाना।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुःषष्टीचंवरप्रातिहार्यमंडिताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व शोक हारी शुभ रूक्षा, है अशोक सार्थक शुभ वृक्षा।
रतन जड़ित श्रीपति निर्माणा, सर्व जीव को अनुपम त्राणा।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकतरुप्रातिहार्यमंडिताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुन्दुभि नभ में गूँजे, बारह सभा जीव तुम पूजें।
तव निर्मल यश ज्ञान कराती, भव्य जनों को निकट बुलाती।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवदुन्दुभिप्रातिहार्य-मंडिताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पवृष्टि तव चरणन होवे, भव्य जनों के मनमल धोवे।
पुष्प समा तव गात बताया, देखत सबका चित हर्षाया।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्य-मंडिताय श्रीवर्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खिरती सर्व देह से वाणी, पान करे नित आतम ज्ञानी।
जन्म जरा मृतु रोग निवारे, भव सुख दे भव पार उतारे।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनिप्रातिहार्यमंडिताय श्री वर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद)

शुभ बारह भावन, करती पावन, वृष का सावन मन हारी।
दुः राग घटा, वैराग्य बढ़ा, शिव पंथ चढ़े वे अविकारी।।
शुभ प्रातिहार्य वसु, देत चित्त रसु, भवि इच्छें तसु गुणवन्ता।
जय श्री भगवन्ता, श्री अरिहन्ता, परम सुसन्ता श्रीकन्ता।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशानुप्रेक्षाफलअष्टप्रातिहार्यसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के दस अतिशय

(तर्ज- दर्श विशुद्धि भावना भाय.....)

सौ योजन सुभिक्ष कराये, रोग शोक दुख दारिद्र जाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।

अतिशय केवल बुध के गाय, नर भव अपना सफल बनाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं शतयोजनसुभिक्ष-केवलज्ञानातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि बल नभ गमन करेय, भवि जन तिनको नमन करेय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।
अतिशय केवल बुध के गाय, नर भव अपना सफल बनाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं गगनगमन-केवलज्ञानातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ दिस से आनन दरशायें, निरखें भवि तो पाप पलाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।
अतिशय केवल बुध के गाय, नर भव अपना सफल बनाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुखप्रतिभास-केवलज्ञानातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण जहाँ पे ठहराय, अदया भाव न लेश टिकाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।
अतिशय केवल बुध के गाय, नर भव अपना सफल बनाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अदयाभावरहित-केवलज्ञानातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर पे उपसर्ग न होय, जो बन्दे सो अघ मल धोय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।
अतिशय केवल बुध के गाय, नर भव अपना सफल बनाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं उपसर्गरहित-केवलज्ञानातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन् कवलाहार न लेत, जग को ज्ञानामृत शुभ देत।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।
अतिशय केवल बुध के गाय, नर भव अपना सफल बनाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं कवलाहाररहित-केवलज्ञानातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्या के मालिक आप, करते जग को तुम निष्पाप।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।
अतिशय केवल बुध के गाय, नर भव अपना सफल बनाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्याईश्वरत्व-केवलज्ञानातिशयसंयुक्ताय श्री वर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृद्धि ना नख केशन होय, अतिशय जिनवर का शुभ जोय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।
अतिशय केवल बुध के गाय, नर भव अपना सफल बनाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं नखकेशवृद्धिरहित-केवलज्ञानातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमिष दृग नाशा पे होय, चार घातिया मल को धोय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।
अतिशय केवल बुध के गाय, नर भव अपना सफल बनाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिमिषदृग-केवलज्ञानातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के प्रतिबिम्ब न होत, चिन्मय भानु रूप शुभ जोत।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।

अतिशय केवल बुध के गाय, नर भव अपना सफल बनाय।
परम गुण होय, जिनवर पूज महा सुख होय।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं छायारहितशरीर-केवलज्ञानातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवकृत 14 अतिशय

(तर्ज-दर्शविशुद्ध भावना भाय....)

अर्ध मागधी भाषा माँहि, भव्य सुने कोई संशय नाँहि।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्द्धमागधीभाष-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैत्री भाव परस्पर होय, बैर भाव भविजन का खोय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं परस्परमैत्रीभाव-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशों दिशा निर्मल दिखलायें, आँधी तूफाँ तहाँ न आयें।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशदिशनिर्मल-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्याम मेघ नहीं गाज गिराय, निर्मल नभ सबको सुखदाय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।

जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलआकाश-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब ऋतु के फल फूल जो आय, भविजन के नित मन को भाय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वऋतुफलयुतवृक्ष-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्री वर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काँच समान धरा हो जाय, सोही निर्मल भाव बनाय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं आदर्शवत्पृथ्वी-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण कमल तल कमल रचाय, ते सब दो पण बीस कहाय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं पगतल-द्विशतपंचविंशतिस्वर्णकमल-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर गुण शुभ जयकार लगाय, नभ में ध्वनि तब गूँजी जाय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं जयकारध्वनि-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंद सुगंध बयार चलेय, भव्यों के सब रोग हरेय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंदसुगंधपवन-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्री वर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धोदक की वृष्टि होय, तन मन के रोगों को खोय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं गंधोदकवृष्टि-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कंटक भूमि सब होय, पवन कुमार करे थुति जोय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कंटकभूमि-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वी पे हो हर्ष अपार, प्रभु सानिध्य महा सुखकार।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं ततप्रदेशहर्षभाव-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म चक्र आगे गतिमान, पूजित तीर्थंकर भगवान्।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।

जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रप्रवर्तन-देवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय वसु मंगल द्रव्य, अघनाशें नित आसन भव्य।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।
जिनवर की जयकार लगाये, चौदह अतिशय देव कराय।
पाप मल धोय, जिनवर पूज महासुख होय।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टमंगलद्रव्यदेवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद)

अतिशय चौबीसम्, हे जगदीशम्, शुभ गुण धीशम् पाप हरम्।
प्रभु आप मुनीशम्, महा गुणीशम्, शुभ मुक्तिसम्, शील धरम्।।
तुम बाल यतीन्द्रा, हे जिन चन्द्रा, पूजित इन्द्रा, सुखकारी।
श्री वर्धमान जिन, पूजे निश दिन, नशे कर्म इन भयहारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवल्यज्ञानातिशयदेवकृतातिशयसंयुक्ताय श्रीवर्धमानमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(जाप- 108 / 1 माला)

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वपापप्रक्षालक श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः।

(जयमाला)

तर्ज- नवदेवता पूजन जयमाला

दोहा

वर्धमान के पद सदा, वर्धमान के मूल।
वर्धमान सेवें सुधी, वर्धमान भव कूल।।

(शेर चाल)

जय जय श्री महावीर जिन देव हमारे।
सिद्धार्थ अरू त्रिशला के राजदुलारे।।
हे बाल ब्रह्मचारी प्रभु अक्ष विजेता।
संसार सिंधु तारने को तीर्थ प्रणेता।।
निर्ग्रन्थ दीक्षा धार तप घोर है कीना।
सब कर्म घाति नाश पाया ज्ञान नवीना।।
तुम मोह जित, रागजित, द्वेषजिता हो।
शिवपंथ साधक भव्य के आदर्श नेता हो।।
हो सर्वदर्शी आप ही सर्वज्ञ देवता।
मोक्षाभिलाषी नित्य ही तव चरण सेवता।।
तुव नाम मात्र जाप से हो नाश पाप का।
ऐसा सुरूप विश्व में हे नाथ आपका।।
तव भक्ति पूजा वन्दना से पाप भी नशें।
मद मोह त्यागी विज्ञ भी सुसिद्धि में बसें।।
जो तीन योग भक्ति से नित स्तुति गाता।
दुर्गति का नाश करके सुक्ख स्वर्ग का पाता।।
सब रोग शोक दुक्ख पीड़ा शीघ्र ही नाशे।
श्रीवीर जिन की भक्ति वा सुदृष्टि कृपा से।।
निज चेतना के भाव ले हम पूज रचाते।
वसुनन्दी आठों याम वे यश नंद हैं पाते।।
भूल चूक माफ मेरी विज्ञ जन करें।
हंस समा दृष्टि करि क्षीर गुण वरें।।

(दोहा)

कर्म विनाशक वीर जिन, भव शिव सुख आधार।
वर्द्धमान जिन भक्ति से, भविजन हो भव पार।।

(घत्ता)

जय त्रिशलानन्दन, पाप निकन्दन, जग अभिनन्दन हितकारी।
तुम पूजित देवा, भवदधि खेवा, दे सुख मेवा अघहारी॥
तव पद नित चरचूँ, मन से अरचूँ, सबविधि खरचूँ कल्याणम्।
हे सर्वस त्यागी, रहित कुरागी, आतम पागी निर्वाणम्॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकरवर्धमानजिनेन्द्राय नमः सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

वर्धमान अतिवीर जिन, सन्मति शिव महावीर।
वीर चरण युग वसु नमें, पाने भवदधि तीर॥

॥शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

आरती

(तर्ज- आरती नेमी प्यारे की......)

आरती वर्धमान जिन की, नशे जो पीडा निश दिन की॥टेक॥
पिता सिद्धार्थ तुम्हारे थे, मनोहर राज दुलारे थे।
दीक्षा यौवन में धारी, रहे तुम बाल ब्रह्मचारी।
कहूँ क्या महिमा सुमिरन की, आरती वर्धमान जिन की॥1॥
वर्ष बारह तप कीना था, ज्ञान केवल तब लीना था।
आत्मा निज का चीन्हा था, देह तव दिव्य नवीना था।
महिमा गाऊँ चरणन की, आरती वर्धमान जिन की॥2॥
केवल तीस वर्ष बीते, अनन्तर कर्म सभी जीते।
कर्म से हुये तभी रीते, सहज रस आतम का पीते।
बेड़ियाँ काटे कर्मन की, आरती वर्धमान जिन की॥3॥
भव्य जन तुम चरणों आये, थाल सुवरन के हैं लाये।
खुशी के बादल हैं छाये, मोक्ष पथ दर्शन से पाये॥
नहीं सीमा गुण वरणन की, आरती वर्धमान जिन की।
नशें जो व्याधि तन मन की, आरती वर्धमान जिन की॥4॥